

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा, समस्तीपुर (बिहार)-८४८१२५

बुलेटिन संख्या-६

दिनांक- शुक्रवार, ३१ जनवरी, २०२०



विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः २३.० एवं १२.३ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ६२ प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में ७६ प्रतिशत, हवा की औसत गति ५.१ कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण १.० मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन ३.३ घंटा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में १३.८ एवं दोपहर में २१.६ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा। रात्री एवं सुबह में कुहासा देखा गया।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(१-५ फरवरी, २०२०)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी १-५ फरवरी तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ तथा मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान २० से २२ डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान ८ से १० डिग्री सेल्सियस के बीच बने रहने का अनुमान है।
- औसतन ७-६ कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से मुख्यतः पछिया हवा चल सकती है। हालांकि ५ फरवरी में पूरवा हवा चलने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में ७५ से ८५ प्रतिशत तथा दोपहर में ६० से ७० प्रतिशत रहने की संभावना है।

समसामयिक सुझाव

- शुष्क मौसम की संभावना को देखते हुए किसान हल्दी एवं ओल की तैयार फसलों की खुदाई प्राथमिकता से करें। अगात राई-सरसों की तैयार फसलों की कटाई करें।
- आम एवं लीची में मंजर आने की संभावना को देखते हुए किसान अपने आम एवं लीची के बागानों में किसी भी प्रकार का कर्षण क्रिया नहीं करें। इन बगानों में दीमक, मधुआ एवं दहिया कीटों तथा पौउड़ी मिल्डेव रोग की निगरानी करें।
- रबी मक्का की फसल जिसमें धनबाल एवं मोचा आ गई हो, ४० किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन वर्षा उपरान्त करें।
- पिछात बोयी गई गेहूँ की फसल में जिंक की कमी के लक्षण (गेहूँ के पौधों का रंग हल्का पीला हो जाना) दिखाई दें रहें हो तो २.५ किलोग्राम जिंक सल्फेट, १.२५ किलोग्राम बुझा हुआ चुना एवं १२.५ किलोग्राम युरिया को ५०० लिटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से १५ दिन के अन्तराल पर दो बार छिड़काव आसमान साफ रहने पर करें। दीमक कीट का प्रकोप फसल में दिखाई देने पर बचाव हेतु क्लोरपायरीफॉस २० ई०सी० दवा का २ लीटर प्रति एकड़ की दर से २०-३० किलो बालू में मिलाकर खड़ी फसलों में समान रूप से व्यवहार करें।
- मटर में फली छेदक कीट की निगरानी करें। इस कीट के पिल्लू फलियों में जालीनुमा आवरण बनाकर उसके नीचे फलियों में प्रवेश कर अन्दर ही अन्दर मटर के दानो को खाती रहती हैं। एक पिल्लू एक से अधिक फलियों को नष्ट करता है। अक्रान्त फलियों खाने योग्य नहीं रह जाती, जिससे उपज में अत्यधिक कमी आती है। कीट प्रबन्धन हेतु प्रकाश फंदा का उपयोग करें। १५-२० टी आकार का पंछी वैठका (वर्ड पर्चर) प्रति हेक्टर लगावे। अधिक नुकसान होने पर क्वीनालफास २५ ई० सी० या नोवाल्युरॉन १० ई० सी० का १ मि० ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।
- अरहर की फसल में फल मक्खी कीट की निगरानी करें। इस कीट के मैगट बीजों को खाते हैं। जिस स्थानों पर मैगट खाते हैं, वहाँ कवक एवं जीवाणु उत्पन्न हो जाते हैं। फलस्वरूप ऐसे दाने खाने योग्य नहीं रह जाते हैं और उपज में काफी कमी आती है। इस कीट से बचाव के लिए करताप हाईड्रोक्लोराइड दवा १.५ मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें।
- आलू की अगात प्रभेद की तैयार फसलों की खुदाई करें। बीज वाली फसल की ऊपरी लत्ती की कटाई कर लें तथा खुदाई के १५ दिनों पूर्व सिंचाई बन्द कर दें। पिछात आलू की फसल में कटवर्म या कजरा पिल्लू की निगरानी करें।
- सब्जियों में निकाई-गुडाई एवं आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। गरमा मौसम की सब्जियों की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। १५०-२०० क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर खाद की मात्रा पुरे खेत में अच्छी प्रकार विखेरकर मिला दें। कजरा (कटुआ) पिल्लू से होने वाले नुकसान से बचाव हेतु खेत की जुताई में क्लोरपायरीफॉस २० ई०सी० दवा का २ लीटर प्रति एकड़ की दर से २०-३० किलो बालू में मिलाकर व्यवहार करें।

आज का अधिकतम तापमान: २२.६ डिग्री सेल्सियस,
सामान्य से १.० डिग्री कम

आज का न्यूनतम तापमान: १०.० डिग्री सेल्सियस,
सामान्य से १.२ डिग्री अधिक

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकार